नेशनल दुनिया (२१ नवम्बर २०१४)

मैनेजमेंट कॉलेजों में क्वालिटी एजुकेशन जरूरी: ढोलकिया

बकुल ढोलकिया

*देश में अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) से संबद्ध कम से कम 4,000 मैनेजमेंट कॉलेज हैं जिनमें से 2,000 कॉलेज अपने 20 फीसदी छात्रों का भी प्लेसमेंट नहीं करा पाते। हाल में ही एक रिपोर्ट आई थी कि प्रबंधन स्कूल छात्रों से मनमानी फीस लेकर उन्हें बेरोजगार बना रहे हैं। ऐसे में बी एवं सी ग्रेड के स्कूल में दाखिला लेने की जगह छात्र सीधे नौकरी की कोशिश कर रहे हैं। आईआईएम (अहमदाबाद) के पूर्व निदेशक **बकुल ढोलकिया** से छात्रों की एंप्लॉयबिलिटी बढ़ाने पर बात की **अमित त्यागी** ने। ढोलकिया ने हाल में ही नई दिल्ली के इंटरनेशनल मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट के डीजी का पदभार संभाला है।*

बड़े शहरों में रोज खुल रहे मैनेजमेंट कॉलेज छात्रों के लिए कितने मददगार हैं?

एआईसीटीई के नॉर्म्स के हिसाब से फिजिकल इंफ्रास्ट्रक्चर का होना कॉलेज खोलने की योग्यता में सबसे जरूरी है। इस वजह से जिनके पास जगह है या जो बिल्डिंग बना सकते हैं, उन्होंने कॉलेज खोल लिए हैं। कॉलेज में पढ़ाई की गुणवत्ता, टीचर्स की जरूरत, कोर्स करिकुलम विकसित करने और रिसर्च को बढ़ावा देने के मामले में अब भी गिनती के कॉलेज ही हैं। इस भीड़ से अब छात्रों का मोहभंग भी हो रहा है और अब छात्र निचले दर्जे के कॉलेज में एडमिशन की जगह सीधे जॉब में उतर रहे हैं।

पुराने बिजनेस स्कूलों का जलवा कम हो रहा है, उन्हें मुकाबले में बने रहने के लिए क्या करने की जरूरत है?

देश में युवाओं की बड़ी संख्या को देखते हुए बिजनेस स्कूलों को क्वालिटी एजुकेशन देने की जरूरत है। फैकल्टी अनुभवी हो, टीचर-स्टूडेंट रेशियो सही हो और स्कूल अपने छात्रों को रोजगार के बेहतर मौके उपलब्ध करा सके, इसके लिए उद्योग जगत के साथ बेहतर रिश्ते बना पाए। समर इंटर्नशिप और इन द हैंड एक्सपीरिएंस इसके लिए बेहतरीन उपाय हैं। मिड लेवल जॉब्स (पांच-सात लाख रुपए सालाना) के लिए एसएमई सेक्टर बेहतरीन जगह है और इसके हिसाब से छात्रों को ट्रेंड किया जाना चाहिए। एसएमई सेक्टर में एंट्री लेवल जॉब्स (पांच-सात लाख रुपए) के बेहतरीन मौके बन रहे हैं और इसमें कोशिश की जा सकती है।

मैनेजमेंट कॉलेज को इंडस्ट्री फ्रेंडली कोर्स डिजाईन करने में क्या दिक्कतें हैं?

कोर्स करिकुलम डेवलप करने के लिए भारी निवेश करना पड़ता है। इसके लिए इंटीग्रेटेड प्रोग्राम (एग्जीक्यूटिव प्रोग्राम, पीएचडी प्रोग्राम, रिसर्च एवं कंसलटेंसी) की जरूरत है। इसके अलावा पहले तो क्वालिटी एजुकेशन की बात करना जरूरी है, कोर्स डिजाईन करना तो बहुत महंगा और समय लेने वाला काम है। इंडस्ट्री की जरूरतों के हिसाब से कोर्स डेवलप करने में दरअसल विशेषज्ञता की जरूरत है जो अधिकतर कॉलेजों के पास नहीं है।

छात्रों को प्लेसमेंट दिलवाने में बेहतर रिकॉर्ड कैसे बन सकता है?

मैनेजमेंट कॉलेजों को स्थानीय इंडस्ट्री से तालमेल बिठाने की कोशिश करनी चाहिए। इससे उन्हें उनकी जरूरतों और छात्रों को प्लेस करने में मदद मिलेगी। केस स्टडी पर अहमियत इसकी एक बड़ी वजह है। केस स्टडी में छात्र किसी सेक्टर के कामकाज के पुराने तरीके का अध्ययन करते हैं और उस तरह की स्थितियां उत्पन्न होने पर अपनी समझदारी/पुराने अनुभव से सबक लेकर फैसला करते हैं। स्थानीय जरूरतों के हिसाब से कोर्स को इंटीग्रेट कर प्लेसमेंट रिकॉर्ड बेहतर बन सकता है।

दैनिक हिन्दुस्तान (२१ नवम्बर २०१४)

एमबीए के प्रति कम हुआ छात्रों का रुझान: ढोलकिया

नई दिल्ली | वरिष्ठ संवाददाता

मनचाही नौकरी नहीं मिलने की वजह से युवाओं का रुझान एमबीए की ओर पिछले कुछ सालों में घटा है। आईआईएम अहमदाबाद के पूर्व निदेशक पद्मश्री डॉ. बकुल ढोलकिया ने यह बात गुरुवार को कही। उन्होंने इंटरनेशनल मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट (आईएमआई) के महानिदेशक का पद संभाला है।

डॉ. ढोलकिया ने कहा कि दस वर्षों के दौरान भारत में बिजनेस स्कूलों की संख्या दो हजार से बढ़कर चारहजार से अधिक पहुंच गई है, लेकिन ज्यादातर संस्थान शिक्षा की गुणवत्ता कायम नहीं रख सके हैं। उन्होंने बताया कि वर्तमान में देश के 60 फीसदी बिजनेस स्कूल अपने 20 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थियों को नौकरी नहीं दिलवा पा रहे हैं। दूसरी ओर, शीर्ष बिजनेस स्कूलों की क्षमता नहीं बढ़ी है। यही वजह है कि युवाओं का एमबीए से मोह भंग हो रहा है और वे अन्य कोर्स का रुख कर रहे हैं।

चिंताजनक

- 60 प्रतिशत बी-स्कूलों के 20% छात्रों को ही मिल पाती है नौकरी
- देश के युवाओं को प्राथमिकता के आधार पर मिलना चाहिए शिक्षा ऋण

जनसत्ता (२१ नवम्बर २०१४)

इंटरनेशनल मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट के महानिदेशक ढोलकिया बने

नई दिल्ली, 20 नवंबर (जनसत्ता)। आइआइएम अमदाबाद के पूर्व निदेशक पद्मश्री डा बकुल ढोलकिया ने इंटरनेशनल मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट (आइएमआइ) के महानिदेशक बनाए गए है। उन्होंने घोषणा की कि इसी सत्र से आइएमआइ में एक साल का एमबीए और एक साल का फुल टाइम पीएचडी लागू किया जाएगा। ये कोर्स इस समय आइआइएम (अमदाबाद) में चल रहे हैं।

गुरूवार को इस बाबत बुलाई प्रेस कांफ्रेस में कहा कि देश में मौजूद 4000 से ज्यादा मैनेजमेंट के संस्थानों में से दो तिहाई से ज्यादा में पढ़ने वाले बच्चों का भविष्य खतरे में है। पचास फीसद से ज्यादा संस्थानों में 20 फीसद छात्रों को कैंपस से नौकरी मिल पा रही है। करीब 2 लाख छात्र कैट के जरिए प्रबंधन की पढ़ाई के लिए परीक्षा में बैठते हैं लेकिन जो आइआइएम (अमदाबाद) सहित सभी दस आइआइएम में जगह नहीं पाते वे प्रबंधन की पढ़ाई बी,सी ग्रेड के संस्थानों से पढ़ाई करने की जगह नौकरी करने का विकल्प चुन लेना ज्यादा उचित समझते हैं। उन्होंने इस व्यवस्था को देश के लिए घातक बताया और कहा कि इसकी वजह संस्थानों का घटता स्तर है। केवल ईमारतें खड़ी कर देने से प्रफेसनलस नहीं पैदा होते।

उन्होंने इन संस्थानों को प्रबंधन संस्थान आइआइएम (अमदाबाद) से सीख लेने की वकालत करते हुए कहा कि यह दुभाग्यपूर्ण है कि एक या दो बच्चों के सालाना पैकेज को आधार बनाकर संस्थान विज्ञापनों की होड़ मचा देते हैं जबकि उनका आकलन छात्र-शिक्षक अनुपात, उनके संकायों की योग्यता, उनमें पीएचडी धारक संकाय की संख्या, सभी छात्रों के प्लेसमेंट, सालाना औसत वेतन, संस्थानों से प्रकाशित होने वाले शोध-पत्रों की संख्या और अंतरराष्ट्रीय विजनेस व प्रबंधन संस्थानों से समझौतों के आधार पर होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि इंटरनेशनल मैनेजमेंट इंसटीट्यूट को आइआइएम अमदाबाद के तर्ज पर विकास किया जा रहा है। यहां शिक्षक-छात्र अनुपात 1:10 का है। जबकि सरकार की टेकनिकल एकेडमी कमेटी में भी शिक्षक-छात्र अनुपात 1:15 के पैमाना दर्ज हैं।

उन्होंने कहा कि आइएमआइ भारत के दस प्रीमियम मैनेजमेंट स्कूलों में एक है तथा देश का पहला कारपोरेट स्पॉन्सर्ड बिज़नेस स्कूल है।

आज समाज (२१ नवम्बर २०१४)

आईएमआई के निदेशक बने डॉ. बकुल

नई दिल्ली। आईआईएम अहमदाबाद के पूर्व निदेशक पद्मश्री डॉ. बकुल ढोलकिया अब राजधानी के इंटरनेशनल मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट (आईएमआई)के महानिदेशक का कार्यभार संभाल लिया है। आईएमआई भारत के दस प्रीमियम मैनेजमेंट स्कूलों में एक है। पद्मश्री डॉ. बकुल ढोलकिया, अंतरराष्ट्रीय ख्याति के 'मैनेजमेंट गुरु' हैं, उन्होंने अपना पूरा जीवन विद्यार्थियों, अकादमिक क्षेत्र, कोरपोरेट प्रमुखों एवं नीति निर्माताओं के कल्याण के लिए बिताया है। कई प्रबंधन संस्थानों में सकारात्मक बदलाव लाने का श्रेय डॉ. ढोलकिया को ही जाता है, जहां उन्होंने संस्थान को कामयाबी की नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उच्च शिक्षा संस्थानों की स्वायत्ता पर अपने साहसी नज़रिए के लिए जाने जाने वाले डॉ. ढोलकिया का आईआईएम, अहमदाबाद के विस्तार में भी प्रमुख योगदान रहा है। अपनी दूरदर्शिता एवं प्रतिबद्धता की भावना के साथ विरासत में मिली इसकी मजबूत नींव पर आगे के काम के बारे में बात करते हुए डॉ. ढोलकिया ने बताया कि आईएमआई एक सशक्त बौद्धिक संपदा है। हम इसकी राष्ट्रीय, एशियाई एवं विश्वस्तरीय पारदर्शिता को बढ़ाने के लिए काम करेंगे तथा आने वाले समय में निश्चित रूप से इसकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

वीर अर्जुन (२१ नवम्बर २०१४)

ढोलकिया बने आईएमआई के महानिदेशक

नई दिल्ली, (भाषा)। भारतीय प्रबंधन संस्थान, अहमदाबाद के पूर्व निदेशक और पदम्श्री डा. बकुल ढोलकिया ने अंतरराष्ट्रीय प्रबंधन संस्थान :आईएमआई: का महानिदेशक पद संभाला है। आईएमआई भारत के दस प्रीमियम प्रबंधन स्कूलों में से एक है और यह देश का पहला कार्पोरेट जगत द्वारा प्रायोजित बिजनेस स्कूल है। इस संस्थान को आरपीजी एंटरप्राइजिज, नेस्ले, सेल, टाटा कैमिकल्स जैसी प्रमुख कंपनियों ने प्रायोजित किया है। आईएमआई दिल्ली की स्थापना 1981 में हुई। बिजनेस वर्ल्ड के हाल के बी-स्कूल सर्वे में आईएमआई को 11वां स्थान मिला। आईएमआई की विज्ञप्ति के अनुसार 'मैनेजमेंट गुरू' के नाम से जाने जाने वाले पदम्श्री डा. ढोलकिया का पूरा जीवन छात्रों, शिक्षाविदों, कंपनियों के प्रमुखों और नीति निर्माताओं को लगातार बेहतर करने के लिये प्रेरित करने में बीता है। वह हमेशा ही उन्हें कुछ नया करने के लिये प्रोत्साहित करते रहे है। आईआईएम अहमदाबाद की विस्तार गतिविधियों के पीछे डा. ढोलकिया का ही हाथ रहा।